सामाजिक विज्ञान

संसाधन एवं विकास

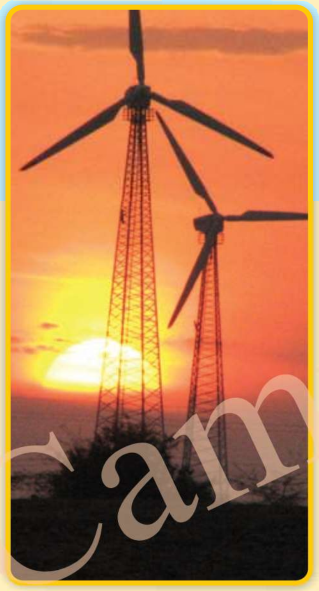

NBCampus

कक्षा 8 के लिए

भूगोल की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2019-2020

प्रथम संस्करण
फरवरी 2008 माघ 1929

पुनर्मुद्रण
जनवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जून 2012 ज्येष्ठ 1933
मार्च 2013 फाल्गुन 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
नवंबर 2014 अग्रहायण 1936
जनवरी 2016 पौष 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 अग्रहायण 1939
जनवरी 2019 पौष 1940

PD 75T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2008

₹ **60.00**

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा ग्रीन वर्ल्ड पब्लिकेशस (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, मांदेर मोड़, बमरौली, इलाहाबाद – 211 003 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 978-81-7450-823-2

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बैंगलूरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	एम. सिराज अनवर
मुख्य संपादक	:	श्वेता उप्पल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	गौतम गांगुली
मुख्य उत्पादन अधिकारी	:	अरुण चितकारा
सहायक संपादक	:	आर. एन. भारद्वाज
उत्पादन सहायक	:	ओम प्रकाश

आवरण, सज्जा एवं चित्रांकन

ब्लूफ़िश

कार्टोग्राफी

कार्टोग्राफिक डिज़ाइंस एजेंसी

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक विद्यालय और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास है। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि विद्यालयों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और सीखने के दौरान अपने अनुभवों पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों एवं स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेंडर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यालय में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में विचार-विमर्श और ऐसी गतिविधियों को प्राथमिकता देती है जिन्हें करने के लिए व्यावहारिक अनुभवों की आवश्यकता होती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इस पाठ्यपुस्तक समिति की मुख्य सलाहकार विभा पार्थसारथी की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के विकास में कई शिक्षकों ने योगदान दिया, इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के

NBCampus

आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित परिषद् टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 नवंबर 2007

NBCampus

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर*, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

विभा पार्थसारथी, *प्रिंसिपल* (अवकाश प्राप्त), सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य

अनिन्दिता दत्ता, *लेक्चरर*, दिल्ली स्कूल ऑफ इकॉनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

अपर्णा पांडेय, *लेक्चरर*, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

अंशु, *रीडर*, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पुनम बिहारी, *वाइस प्रिंसिपल*, मिरांडा हाऊस, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

भगीरथी झिंगरन, *टी.जी.टी.*, पाथवेज़ वर्ल्ड स्कूल, गुड़गाँव

मीरा हूण, *टी.जी.टी.*, मॉडर्न स्कूल, बाराखम्बा रोड, नयी दिल्ली

श्यामला श्रीवत्स, *टी.जी.टी.*, सरदार पटेल विद्यालय, नयी दिल्ली

समिता दास गुप्ता, *पी.जी.टी.*, आनंदालय, आनंद, गुजरात

श्रीनिवासन के., *टी.जी.टी.*, माल्या अदिति इंटरनेशनल स्कूल, बंगलौर

हिंदी अनुवाद

भावना मोहन, उत्तम नगर, नयी दिल्ली

रंजन कुमार चौधरी, *पी.जी.टी.*, गवर्नमेंट सहशिक्षा उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खेड़ा डाबरा

सदस्य-समन्वयक

तनु मलिक, *लेक्चरर*, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली

NBCampus

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, इस पुस्तक के विकास में सहयोग देने हेतु प्रमिला कुमार, *प्रोफ़ेसर* (अवकाश प्राप्त), भोपाल एवं शिप्रा नायर, दार्जिलिंग का आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, वीर सिंह आर्य, *प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी* (अवकाशप्राप्त), वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार; नरेन्द्र डबास, *लेक्चरर*, एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा; दीपावली बधवार, *लेक्चरर*, एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा; निरंजन प्रसाद शर्मा, *पी.जी.टी.*, गवर्नमेंट बाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रेलवे कॉलोनी, तुगलकाबाद, नयी दिल्ली का भी आभार व्यक्त करती है, जिन्होंने अनुवाद के पुनरीक्षण हेतु अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

परिषद्, सविता सिन्हा, *प्रोफ़ेसर* एवं *विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के प्रति भी अपनी कृतज्ञता अर्पित करती है, जिन्होंने प्रत्येक स्तर पर इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में अपना अमूल्य सहयोग दिया।

परिषद्, प्रस्तुत पुस्तक के निर्माण में निम्नोक्त सभी व्यक्तियों एवं संगठनों का आभार व्यक्त करती है जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक को सहज बनाने हेतु विभिन चित्र एवं अन्य पाठ्य सामाग्री उपलब्ध करवाई:

अंशु, *रीडर*, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली को चित्र 2.5, 2.15 एवं 4.14 के लिए; श्रीनिवासन के., *टी.जी.टी.*, माल्या अदिति इंटरनेशनल स्कूल, बेंगलुरू को पृष्ठ 45 पर मक्का की विभिन्न प्रकारों के चित्र के लिए; आस्ट्रिया से कृष्ण श्योराण को चित्र 2.1 के लिए; मोहम्मद असलम, लर्निंग टच, नयी दिल्ली को चित्र 4.4 के लिए; आर.सी. दाश, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली को चित्र 2.8, 2.10 एवं पृष्ठ 50 पर बाँस के झुंड के चित्रों के लिए; निमिषा कपूर को मुख्य पृष्ठ पर दिए गए पवन-चक्की, छात्रों एवं कुम्हार के चित्रों के लिए; ब्लूफ़िश को चित्र 1.1 एवं पृष्ठ 50 पर अभ्यास पुस्तिका के चित्र के लिए; डी.एम.डी./गृह मंत्रालय को पृष्ठ 12, 53 एवं 54 पर क्रमशः प्रतिधारी दीवार, यूनियन कार्बाइड फैक्ट्री एवं गाओ क्याओ में बचाव अभियान के चित्रों के लिए; उद्योग मंत्रालय, बिहार सरकार को चित्र 4.5, 4.6, 4.13 एवं 5.1 के लिए; डायरेक्टोरेट ऑफ एक्सटेंशन, कृषि मंत्रालय, आई.ए.आर.आई. कैम्पस, न्यू पूसा, नई दिल्ली को चित्र 2.9, 4.9, 4.10, 4.11 एवं 4.14 के लिए; पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 2.11, 2.12, 2.13, 2.14, 2.16, 2.17, 2.18, 2.19 एवं पृष्ठ 18 पर गिद्ध के चित्र के लिए; कोयला मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.1 एवं 3.10 के लिए; नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.15 के लिए; सी.ओ.एम.एफ.ई.डी., पटना को चित्र 5.2 के लिए; विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.13, 3.16 एवं 3.17 के लिए; ओ.एन.जी.सी. को चित्र 3.4 एवं 3.11 के लिए; आई.टी.डी.सी. पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार को चित्र 3.9 के लिए; सामाजिक विज्ञान, पाठ्यपुस्तक, कक्षा 8, भाग 2, एन.सी.ई.आर.टी, 2005 को चित्र 2.6, 2.7, 4.7, 4.8, 4.12, 4.16, 4.17, 4.18 एवं पृष्ठ 12 पर भूस्खलन के चित्र के लिए; द *टाइम्स ऑफ इंडिया*, *हिंदुस्तान टाइम्स* एवं *इंडियन एक्सप्रेस* को पृष्ठ 20 पर दिए गए समाचारों के लिए; अरविंद गुप्ता, आई.यू.सी.ए.ए., पूना को पृष्ठ 34 पर दिए गए सोलर वर्कर के क्रियाकलाप के लिए एवं कौशल शर्मा, *रीडर*, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली को पृष्ठ 12 पर दिए गए भूस्खलन के वस्तुस्थिति अध्ययन के लिए।

परिषद् पाठ्यपुस्तक के निर्माण में उल्लेखनीय सहयोग देने हेतु उत्तम कुमार, अनिल शर्मा, मुकद्दस आज़म, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; सतीश झा, *कॉपी एडिटर;* अचल कुमार, *प्रूफ रीडर* तथा दिनेश कुमार, *कंप्यूटर स्टेशन इंचार्ज* का भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है। इसी संदर्भ में प्रकाशन विभाग, एन.सी.ई.आर.टी. का सहयोग भी प्रशंसनीय है।

विषय सूची

आमुख	*iii*
अध्याय 1 संसाधन	1–6
अध्याय 2 भूमि, मृदा, जल, प्राकृतिक वनस्पति और वन्य जीवन संसाधन	7–21
अध्याय 3 खनिज और शक्ति संसाधन	22–37
अध्याय 4 कृषि	38–47
अध्याय 5 उद्योग	48–61
अध्याय 6 मानव संसाधन	62–71

NBCampus

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

NBCampus

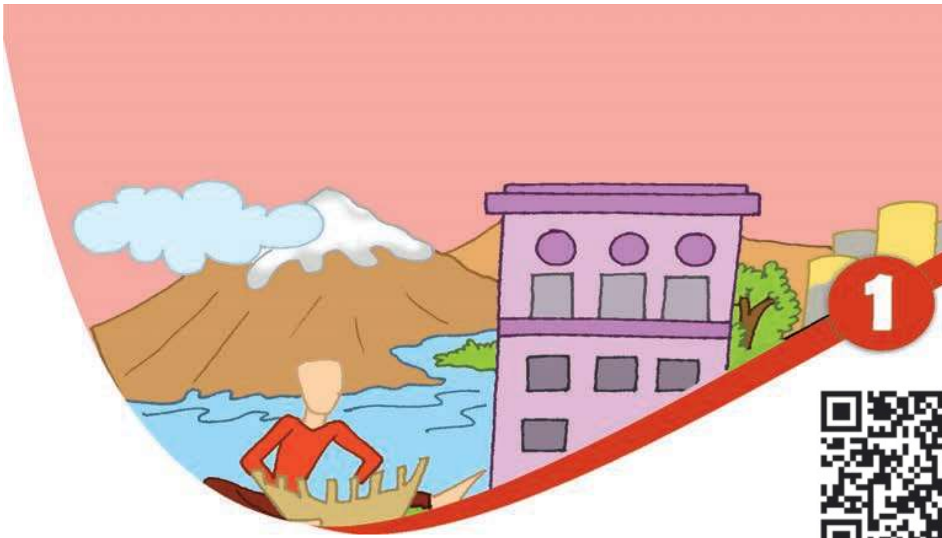

1 संसाधन

0859CH01

मोना और राजू अपना घर साफ़ करने में अम्मा की मदद कर रहे थे। "इन सभी चीज़ों को देखो... कपड़े, बर्तन, अनाज, कंघा, शहद की बोतल, किताबें... इनमें से प्रत्येक उपयोगी है," मोना ने कहा। "इसलिए ये महत्त्वपूर्ण हैं," अम्मा ने कहा। "ये संसाधन हैं।" "संसाधन क्या है?" अम्मा से राजू ने प्रश्न पूछा। अम्मा ने बताया, "प्रत्येक वस्तु जिसका उपयोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जा सकता है, वह संसाधन है।"

"अपने चारों ओर देखिए और निरीक्षण कीजिए, आप संसाधनों के विविध प्रकारों को पहचानने में सक्षम होंगे। आप प्यास लगने पर जो जल पीते हैं, आप अपने घर में जिस विद्युत का उपयोग करते हैं, स्कूल से घर पहुँचने के लिए उपयोग किया गया रिक्शा, पाठ्यपुस्तक जिसका उपयोग आप अध्ययन के लिए करते हैं, ये सभी संसाधन हैं। आपके पिता ने आपके लिए नाश्ता तैयार किया है। उन्होंने जिन ताज़ी सब्ज़ियों का उपयोग किया है, वे भी एक संसाधन हैं।"

जल, विद्युत, रिक्शा, सब्ज़ियाँ और पाठ्यपुस्तक सभी में कुछ एक जैसा क्या है? उनमें से सभी वस्तुओं का उपयोग आपके द्वारा किया गया है। इसीलिए वे उपयोगी हैं। एक वस्तु अथवा पदार्थ की उपयोगिता अथवा प्रयोज्यता उसे एक संसाधन बनाती है।

राजू अब जानना चाहता था कि, "कोई भी वस्तु संसाधन कैसे बनती है?" अम्मा ने बच्चों को बताया वस्तुएँ उस समय संसाधन बनती हैं जब उनका कोई मूल्य होता है। "इसका प्रयोग अथवा उपयोगिता इसे मूल्य प्रदान करते हैं। सभी संसाधन मूल्यवान *होते हैं।" अम्मा ने कहा।*

मूल्य का अर्थ महत्त्व होता है। कुछ संसाधनों का आर्थिक मूल्य होता है जबकि कुछ संसाधनों का आर्थिक मूल्य नहीं होता है। उदाहरणार्थ धातुओं का आर्थिक मूल्य होता है लेकिन एक मनोरम भूदृश्य का आर्थिक मूल्य नहीं होता है। परन्तु ये दोनों संसाधन महत्त्वपूर्ण हैं और मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करते हैं।

कुछ संसाधन समय के साथ आर्थिक रूप से मूल्यवान हो सकते हैं। आपकी दादी के घरेलू नुस्खों का आज कोई वाणिज्यिक मूल्य नहीं है। लेकिन यदि वे पेटेन्ट करने के उपरांत मेडिकल फर्म द्वारा बेचे जाते हैं, तब वे आर्थिक रूप से मूल्यवान हो सकते हैं।

आओ कुछ करके सीखें

अपने घर और अपनी कक्षा में उपयोग किए जाने वाले किन्हीं पाँच संसाधनों की सूची बनाइए।

शब्दावली

पेटेन्ट

इसका तात्पर्य किसी विचार अथवा आविष्कार पर एकमात्र अधिकार से है।

NBCampus

समय और प्रौद्योगिकी दो महत्त्वपूर्ण कारक हैं जो पदार्थों को संसाधन में परिवर्तित कर सकते हैं। दोनों लोगों की आवश्यकताओं से संबंधित हैं। लोग स्वयं ही सबसे महत्त्वपूर्ण संसाधन हैं। ये लोगों के विचार, ज्ञान, आविष्कार और खोज ही हैं जो और अधिक संसाधनों की रचना करते हैं। प्रत्येक खोज अथवा आविष्कार से बहुत से अन्य खोज एवं आविष्कार होते हैं। आग की खोज से खाना पकाने की पद्धति एवं अन्य प्रक्रियाओं का प्रचलन हुआ जबकि पहिए के आविष्कार से अन्ततः परिवहन की नवीनतम विधियों का विकास हुआ। जलविद्युत बनाने की प्रौद्योगिकी ने तेजी से बहते जल से ऊर्जा उत्पन्न करके, उसे एक महत्त्वपूर्ण संसाधन बना दिया है।

संसाधनों के प्रकार

सामान्यतः संसाधनों को प्राकृतिक, मानव निर्मित और मानव में वर्गीकृत किया गया है।

प्राकृतिक संसाधन

जो संसाधन प्रकृति से प्राप्त होते हैं और अधिक संशोधन के बिना उपयोग में लाए जाते हैं, प्राकृतिक संसाधन कहलाते हैं। वायु, जिसमें हम साँस लेते हैं, हमारी नदियों और झीलों का जल, मृदा और खनिज, सभी प्राकृतिक संसाधन हैं। इन संसाधनों में से बहुत से प्रकृति के निःशुल्क उपहार हैं और सीधे ही उपयोग में लाए जा सकते हैं। कुछ परिस्थितियों में, प्राकृतिक संसाधन का सबसे अच्छी तरह उपयोग करने के लिए औज़ारों और प्रौद्योगिकी की आवश्यकता हो सकती है।

प्राकृतिक संसाधनों को विस्तृत रूप से नवीकरणीय और अनवीकरणीय संसाधनों में विभाजित किया जा सकता है।

नवीकरणीय संसाधन वे संसाधन हैं जो शीघ्रता से नवीकृत अथवा पुनः पूरित हो जाते हैं। इनमें से कुछ असीमित हैं और उन पर मानवीय क्रियाओं का प्रभाव नहीं होता, जैसे सौर और पवन ऊर्जा। लेकिन फिर भी कुछ नवीकरणीय संसाधनों, जैसे जल, मृदा और वन का लापरवाही से किया गया उपयोग उनके भंडार को प्रभावित कर सकता है। जल असीमित नवीकरणीय संसाधन प्रतीत होता है। फिर भी जल की कमी और प्राकृतिक जल स्रोतों का सूखना आज विश्व के बहुत से भागों में एक बड़ी समस्या है।

अनवीकरणीय संसाधन वे संसाधन हैं जिनका भंडार सीमित है। भंडार के एक बार समाप्त होने के बाद उनके नवीकृत अथवा पुनः पूरित होने में हज़ारों वर्ष लग सकते हैं। यह अवधि मानव जीवन की अवधि से बहुत अधिक है,

शब्दावली

प्रौद्योगिकी : किसी कौशल करने अथवा वस्तु बनाने में नवीनतम ज्ञान का अनुप्रयोग प्रौद्योगिकी है।

क्रियाकलाप

अम्मा की सूची से उन संसाधनों पर गोला बनाइए जिनका अभी वाणिज्यिक मूल्य नहीं है।

अम्मा की सूची

- सूती वस्त्र
- लौह-अयस्क
- बुद्धि
- औषधीय पौधे
- चिकित्सा ज्ञान
- कोयला निक्षेप
- मनोरम दृश्य
- कृषि भूमि
- शुद्ध पर्यावरण
- लोक गीत
- सुहावना मौसम
- संसाधन परिपूर्णता
- एक अच्छी संगीत ध्वनि
- दादी माँ के घरेलू नुस्खे
- मित्रों एवं परिवारों से स्नेह

NBCampus